Shri Hari Parshad et al. International Journal of Recent Research Aspects ISSN: 2349-7688, Vol. 4, Issue 2, June 2017, pp. 75-81

# लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समाजवाद सम्बन्धी अवधारणा

**श्रीहरि प्रसाद**
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग
हे.न.ब.ग. (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

**सारांश :–**
जयप्रकाश नारायण के विचारों में समाजवाद का विचार सबसे प्रमुख है। वे संसाधनों के असमान वितरण व शोषण को जनता की असहाय स्थिति का प्रमुख कारण मानते थे। समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे – भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, स्वार्थ परायणता आदि अनैतिक तत्व सामाजिक व्यवस्था को और अधिक पेचीदा बनाते जा रहे है। देश की आजादी के पश्चात भारतीय संविधान में भारत को समाजवादी अर्थव्यवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है और सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार किया गया है कि भारत का भावी विकास समाजवादी ढांचे के रूप में किया जायेगा। किन्तु दार्शनिकों, बुद्धिजीवियों, संविधान निर्माताओं ने जो सपने संजोये वे सारे सपने, सम्पत्तिगत विषमताओं के कारण प्राकृतिक प्रदत्त संसाधन (जल, जंगल, जमीन) निजी स्वार्थों के भेट चढ़ रहे है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। साथ ही उन कारणों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है जिसके कारण, किसानों, मजदूरों, शोषितों आदि का देश की लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था में शत–प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पा रही है।

**सांकेतिक शब्द :–** समाजवाद–सामान्य हित का संर्वधन

**समाजवाद** :– समाजवाद जोकि वर्तमान समय में सबसे अधिक लोकप्रिय शब्द है, का प्रयोग 1827 ई0 में राबर्ट ओवन के विचारों का प्रचार करने के लिए स्थापित पत्रिका 'ओ नाइट कोआपरेटिव' में व्यक्तिवादी और उदारवादी विचारों के विरूद्ध भावों को प्रदर्शित करने के लिए किया गया। उसके बाद 1835 में राबर्ट ओवर की अध्यक्षता में स्थापित 'सब राष्ट्रों के सब वर्गों के समुदाय' ने 'समाजवाद' और समाजवादी शब्दों का प्रयोग किया। तत्पश्चात् फ्रांसीसी लेखक 'रेबाद' ने अपनी रचना रिफार्मेशन मार्डन में इन शब्दों का विस्तृत प्रयोग करते हुए इन्हें व्यापक रूप से प्रचलित कर दिया। वर्तमान समय में समाज को एक स्वेच्छापूर्वक बनाये जाने वाला संगठन और राज्य को एक आवश्यक वाध्यकारी शक्ति रखने वाली संस्था समझा जाता है। **ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी** के अनुसार ''समाजवाद का अभिप्राय ऐसे सिद्धान्त या नीति से है जिसका उद्देश्य यह होता है कि उत्पादन के साधनों पूंजी, भूमि, सम्पत्ति आदि पर समान रूप से समुदाय का स्वामित्व या नियंत्रण हो और इनका प्रशासन सबके हितों की दृष्टि से किया जाये।'' **फ्रैंच विचारक प्रूधों के अनुसार** ''समाज के सुधार के लिए व्यक्त की जाने वाली प्रत्येक आकांक्षा समाजवाद है।''1

**समाजवाद की अवधारणा :–**

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

लोकनायक जयप्रकाश नारायण का नाम उन समाजवादियों में से है जिन्होंने मार्क्स की मूल दृटि को ओझल नही होने दिया। जयप्रकाश नारायण प्रारम्भ में मार्क्सवादी विचारधारा को लेकर चले तथा उसी के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने नवीन समाज की कल्पना की तथा समाज से सम्बन्धित प्रत्येक समस्या का निदान साधनों से करने का सुझाव समाज के समक्ष रखा। क्योंकि जयप्रकाश नारायण मार्क्सवादी दृष्टि के आधार पर अपना चिन्तन प्रारम्भ किया था। जयप्रकाश नारायण को अगर स्वतंत्रता का ध्येय महात्मा गांधी से मिला तो समता का ध्येय कार्लमार्क्स से उन्होंने दोनों विचारों को शुरू से लेकर अंत तक सम्बद्ध रखा।[2]

जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का निदान ढूंढा है। 1936 में जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद क्यों? (Why Socialigm) पुस्तक की रचना की इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने समाजवाद की भारतीय सन्दर्भ में व्याख्या की तथा भारत में इनकी उपयोगिता पर बल दिया, और बताया कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है तथा सामाजिक संगठन का उद्देश्य यह है कि ''यह संस्कृति एवं अवसर की विषमताओं को दूर किया जाए। जीवन की श्रेष्ठ वस्तुओं के कष्टमय असमान वितरण को समाप्त किया जाए और उस दशा को समाप्त किया जाए। जिसमें अधिकांश व्यक्ति गरीबी, भूखमरी, गन्दगी, रोग एवं अज्ञान का जीवन जी रहे हैं और थोड़े से लोग आराम, संस्कृति, पद और सत्ता का आनन्द उठा रहें हैं।'' जयप्रकाश नारायण आधुनिक सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में आमूल चूल परिवर्तन के हिमायती थे उनकी दृष्टि में समाजवाद आर्थिक और सामाजिक पुनर्निमाण का सिद्धान्त (Theory of Socia Economic Reconstruction) समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना है।[3]

जयप्रकाश नारायण का मत है कि समाजवादी राज्य को मूलभूत मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए और नैतिकता विहीन जीवन को अस्वीकार करना चाहिए।वे साधन और साध्य के पारस्परिक सम्बन्ध को महत्व देते हैं। उच्च आदर्शों के अनुरूप किये गये कार्य उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव बनाते हैं। इसके विपरीत आचरण द्वारा लक्ष्य प्राप्ति सम्भव नही है। नये समाज की स्थापना के लिए समाजवाद की सफलता के लिए जयप्रकाश नारायण ने लोकतांन्त्रिक राज्य की अनिवार्यता पर बल दिया, राजनीतिक दृष्टि से समाजवाद की यथार्थता इसी पर आधारित है कि समाजवाद की निम्नतम स्तर पर लोक शासन में उतार दिया जाय। केवल राष्ट्रीय स्तर पर समाजवाद की चर्चा निरर्थक है।[4]

समाजवाद का मूल सिद्धान्त होता है असमानताओं का निराकरण करके समता के आधार पर समाज की स्थापना। जयप्रकाश नारायण एक वर्गविहीन, जातिविहीन समाज की कल्पना करते हैं। उन्हीं के शब्दों में ''आर्थिक समानता के बिना सामाजिक समता की कल्पना तथा सामाजिक समता के बिना आर्थिक समता की कल्पना निरर्थक है। दोनों समानताएं मात्र एक दूसरे को पूर्ण बनाती है इनके अभाव में समाजवाद की कल्पना कोरी है।''[5]

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद की स्थापना करने के लिए शान्तिपूर्ण साधनों का समर्थन किया है। मार्क्स के क्रान्तिकारी समाजवाद की अपेक्षा वे लोकतान्त्रिक समाजवाद की स्थापना के इच्छुक रहे। उनके अनुसार मार्क्स द्वारा क्रान्तिकारी समाजवाद के प्रतिपादन के पश्चात लोकतन्त्र के विकास ने काफी शक्ति प्राप्त कर ली है अतः समाजवाद की स्थापना लोकतान्त्रिक तौर तरीकों से होनी चाहिए। स्वयं मार्क्स ने 'हेग' (1872) में दिये गये भाषण में शान्तिपूर्ण परिवर्तन द्वारा समाजवाद की स्थापना को सम्भव बताया।[6]

जयप्रकाश नारायण एक सच्चे भारतीय समाजवादी विचारक है। उनका समाजवाद मार्क्स के समाजवाद की तरह कठोर न होकर जनतान्त्रिय समाजवाद है। उनके समाजवाद का प्रमुख ध्येय भारतीय समाज में बहुपक्षीय सुधार करना है। जयप्रकाश नारायण का समाजवाद भारतीय परिस्थितियों की उपज है। उन्होंने समाजवाद को लोकप्रिय बनाने तथा इसे भारतीय आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में लागू करने को महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे अपनी पुस्तक 'सम्पूर्ण क्रान्ति की ओर' में समाजवाद को जीवन की तरह एक सारणी तथा नैतिक व मानसिक दृष्टिकोण कहा है। जयप्रकाश नारायण का समाजवाद सर्वोदयी समाजवाद है। उनके समाजवाद का स्वरूप विशुद्ध रूप से भारतीय है।[7]

समाजवादी समाज की आर्थिक संरचना पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने ये बताया कि केवल उद्योगों का राष्ट्रीयकरण वेतन की समानता तथा श्रमिकों पर नियन्त्रण करके प्रस्तुत नही कर सकता। वस्तुतः उद्योगों का राष्ट्रीयकरण ने देश में नौकरशाही का शासन स्थापित कर दिया है। समाजवादी अर्थव्यवस्था की संरचना विकेन्द्रित होनी चाहिए। बड़े पैमाने पर तथा केन्द्रित उत्पादन के माध्यम से देश में समाजवाद नही लाया जा सकता। इसके लिए कुटिर उद्योगों, गृह उद्योगों एवं छोटे–छोटे उद्योगों की देशभर में स्थापना कर उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। केवल अर्थव्यवस्था ही नही स्वामित्व का विकेन्द्रीकरण भी आवश्यक है। विभिन्न स्तरों पर स्वामित्व होते हुए ग्राम संगठन या नगर निगमों तक स्वामित्व विभाजित होना चाहिए। जयप्रकाश नारायण के ये विचार डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचारों को प्रतिध्वनित करते हैं।[8]

लोहिया के विचारों का समान आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण पर जयप्रकाश नारायण का सुझाव यह दर्शाता है कि चंद व्यक्तियों के हाथ में पूंजी का केन्द्रिकरण न हो। इस बात को समझने की आवश्यकता है कि समाज वादी समाज अधिनायकतंत्र से मुक्त रहे। वे महात्मा गांधी के आदर्शों को ध्यान में रखकर यह सिद्ध करना चाहते है कि अनुचित साधनों से इच्छित साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। समाजवाद की सफलता के लिए जयप्रकाश नारायण ने व्यक्ति की इच्छाओं को सीमित करने की आवश्यकता पर बल दिया। जब तक व्यक्ति की मांग को नियन्त्रित नही किया जाता तब तक समाजवादी समाज का प्रयोग सम्भव नही। समाज के हित में मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं पर नियन्त्रण स्थापित करना समानता, स्वतंत्रता एवं भातृत्व के लिए उपयोगी ही नही अपरिहार्य भी है।[9]

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

समाजवादी समाज का निर्माण मौलिक रूप से एक नवीन मानव का निर्माण है, किन्तु इस तथ्य की स्वीकारोक्ति के बाद भी राज्य रूपी वाहन में बैठने वालों की दौड़ निरन्तर जारी है। यह स्पष्ट है कि यदि मानवीय पुनर्निर्माण समाजवद के निर्माण की कुंजी है और वह राज्य के क्षेत्र की पहुंच के बाहर है तो समाजवादी आन्दोलन पर जोर देने के लिए आन्दोलन को राजनीतिक कार्यों के स्थान पर पुनर्निर्माण के कार्य में परिवर्तित कर देना चाहिए। जयप्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद के लिए सबसे बड़ी चुनौति यह है कि मानवीय पुनर्निर्माण किस प्रकार से सम्भव है इस प्रश्न के अनेक उत्तर दिये गये हैं कोई शिक्षा को इस कार्य के लिए उपयुक्त मानता है तो कोई अन्य तथ्यों को शिक्षा से इस समस्या का समाधान नही है। जिस बात की आवश्यकता है वह यह है कि समाजवादी आन्दोलन एक जन आन्दोलन के रूप में मानवीय पुनर्निर्माण का कार्य करें तो ऐसे आन्दोलन सफल हो सकता है जब वह गैर राजनीतिक उद्देश्यों से चलाया जाये और राज्य पर अधिपत्य करने का इसका लक्ष्य न हो, क्योंकि मानव के पुनर्निर्माण की दृष्टि से राज्य पूर्णतया अंसगत सिद्ध होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के लिए अधिक से अधिक प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखता हो और उसकी पूर्ति में लगा रहता हो तो समाजवादी समाज की स्थापना नही हो सकती। जब तक व्यक्ति आत्मनियंत्रण का पाठ नही पढ़ लेता तथा ऐसे नियंत्रण के अनुरूप अपने जीवन को नही बना लेता तब तक व्यक्ति का व्यक्ति के मध्य एवं उसके समूहों, वर्गों, राष्ट्रों के मध्य संघर्ष बना रहेगा।[10]

विज्ञान ने व्यक्ति के हाथ में सम्पन्न जीवन के साधन उपलब्ध किये हैं। सार्वभौमिक भौतिकवादी सुख के भावना एवं लालच ने स्वार्थपरायणता के कारण मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य के बीच व्यापक कष्टों का जाल बुन दिया है। विश्व में प्रत्येक के लिए काफी वस्तुएं उपलब्ध हैं किन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता है। जयप्रकाश नारायण ने इस पर भय प्रगट किया है कि यदि मानव का नैतिक विकास वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के आधार समानान्तर नहीं रहा तो उसका भविष्य घोर अंधकार मय हो जायेगा। इसलिए आवश्यकता इस बात की नहीं है कि स्वार्थों में परस्पर द्वन्द्व से किन्तु सामाजिक मूल्यों पर आधारित समांता की भावना लायी जाये। शक्ति की पिपासा को छोड़कर राजनीति में सहभागी बनने वाले व्यक्तियों द्वारा नये जीवन का प्रारम्भ किया जाये। असमानता के उद्देश्य के स्थान पर समानता का प्रयोग प्रारम्भ किया जाय। वास्तविक समानता की स्थापना तब तक सम्भव नही है जब तक समाज के सदस्य मार्क्स के प्रत्येक व्यक्ति से उसकी क्षमता के अनुसार तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार के आदर्श का पालन नही करता।[11]

यद्यपि कोई भी राज्य व्यक्ति को इस आदर्श के अनुरूप जीने के लिए बाध्य नही कर सकता, यह तभी व्यवहार में माना जा सकता है जब मानव समुदाय स्वेच्छा से इसे स्वीकार करे। जयप्रकाश नारायण ने भारत में समाजवाद स्थापित करने के लिए जो प्रयास किये वे महत्वपूर्ण हैं। उनके समाजवादी विचारों में आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन के जो बीज निहित है वे सामयिक परिस्थितियों में लागू हो सकते हैं। आज आर्थिक, सामाजिक विषमताओं का जो भयानक रूप भारतीय लोकतंत्र को नष्ट कर रहा है, उसे उत्पादन के

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

साधनों के सामाजिकरण विचारक के रूप में जयप्रकाश नारायण को भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और उनके समाजवादी विचार शाश्वत् महत्व के हैं।[12] जयप्रकाश नारायण का मत है कि समाजवाद आज के युग की सर्वाधिक लोकप्रिय विचारधारा है और समाजवाद की इस अत्यधिक लोकप्रियता ने ही इसे बहुत अधिक अनिश्चितता का रूप प्रदान कर दिया है। समाजवाद की अनिश्चितता के प्रमुख कारण इस प्रकार है :–

1– समाजवाद एक अत्यन्त व्यापक विचारधार है, जिसने विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अवस्थाओं में विभिन्न रूप धारण कर लिए हैं। लाभ–हानि को परस्पर बांटने की सामान्य बात से लेकर राज्य को अधिकतम कार्य सौंपने की सभी बातें समाजवाद के अन्तर्गत आ जाती है।

2– समाजवाद एक राजनीतिक विचारधारा होने के साथ–साथ आर्थिक विचारधारा भी है।

3– समाजवादी विचारधारा की इतनी अधिक धाराएं एवं उपधाराएं निकल चुकी हैं और निकलती जा रही हैं कि इसका एक निश्चित रूप निर्धारित करना लगभग असम्भव है। इसके अतिरिक्त ये विभिन्न समाजवादी उपधाराएं अपने उद्देश्यों और प्रणालियों में एक–दूसरे से इतनी भिन्न हैं कि इनके आधार पर समाजवाद को समझना एक विफल प्रयत्न बनकर रह जाता है। इस स्थिति को इस प्रकार भी व्यक्त किया जा सकता है कि समाजवाद उस बहुसिर वाले जन्तु की तरह है जिसका जितनी देर में एक सिर भी नहीं कट जाता उतनी ही देर में एक नया सिर उसके स्थान पर निकल पड़ता है।

4– समाजवाद एक राजनीतिक विचारधारा और दर्शन ही नहीं वरन् एक आन्दोलन भी है। इस आन्दोलन की भी कोई एक निश्चित दिशा होने के स्थान पर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में वह विविध रूपों में हैं कहीं पर वह शान्ति–पूर्ण आन्दोलन के रूप में है तो कहीं पर हिंसक आन्दोलन के रूप में। कहीं पर वह प्रजातान्त्रिक पद्धति द्वारा संचालित है तो कहीं पर वह क्रान्तिकारी–प्रक्रिया के रूप में है। एक ही देश में भी अनेक प्रकार के समाजवादी विचार और आन्दोलन देखे जा सकते हैं। भारत इसका उदाहरण है।

5– समाजवाद एक प्रगतिशील और परिवर्तनशील दर्शन तथा कार्यक्रम है जिसका स्वाभाविक गुण बदलती हुई आर्थिक तथा राजनीतिक आवश्यकताओं के साथ–साथ अपने स्वरूप में परिवर्तन करना है। समाज के इस परिवर्तनशील वातावरण समाजवाद के सम्बन्ध में आज निश्चित की गई धारणा कल अनुपयुक्त हो सकती है। ऐसी स्थिति में अनिश्चितता समाजवाद का एक स्वाभाविक दर्शन होने के कारण कोई बनी–बनाई योजना तथा निश्चित पद्धति हो ही नहीं सकती है।[13] जयप्रकाश नारायण लोकतांत्रिक समाजवाद को समाज के आदर्श एवं अमिट रूप में अंकित किये हैं। ऐसा उन्होने भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि तथा अपने अनुभवों और साथ

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

ही अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी विचाारधारा एवं यूरोप में तथा अन्यत्र समाजवादी पुनर्निर्माण के अनुभवों आधार पर ही किया है। [14]

## निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समाजवाद का तात्पर्य उत्पादन एवं वितरण के साधनों का सामूहिक स्वामित्व स्थापित करना और आर्थिक विषमताओं को मिटाकर शोषण विहिन समाज की स्थापना करना। गरीबी, विषमता एवं शोषण जैसी सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान समाजवाद से अलग हटकर कतई सम्भव नहीं। इस हेतु जयप्रकाश ने समाजवाद को वरैण्य बनाने की महती प्रयास किया। अतः जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद की घोर वकालत की है। जे0पी0 सम्पत्ति के समान वितरण जिसमें मुट्ठीभर लोगों के पास सभी सुख के साधन हों और एक विशाल जन समूह बेकारी, गरीबी, भूख, बीमारी आदि समस्याओं से पीड़ित हों। को समाप्त करने के लिए निजी स्वामित्व के स्थान पर सामूहिक स्वामित्व की स्थापना के प्रबल पक्षधर थे। आर्थिक शोषण उन्मूलन और आर्थिक विषमताओं के अंत के लिए ऐसा करना उन्होंने आवश्यक जाना। समाजवाद को प्राप्त करने के लिए जे0पी0 नारायण लोकतान्त्रिक तौर–तरीकों के हिमायती थे। वे वस्तुतः समाजवाद की प्राप्ति हेतु सशस्त्र विद्रोह के विरूद्ध थे और शान्तिपूर्ण लोकतान्त्रिक तरीकों से इसे हासिल करने की बात करते थे। अंततः कहा जा सकता है कि जे0पी0 के समाजवादी आदर्श में शान्तिपूर्ण लोकतान्त्रिक पद्वति द्वारा शोषण विहीन समाज की स्थापना की परिकल्पना की गई हैं। यदि हम भारत को एक महान भारत बनाने का सपना देखते हैं तो ये ही कदम है जिनके सहारे अपने सपने को हम साकार कर सकते हैं। यदि हमें इस महान देश के अंचल से अन्याय और अज्ञानता को दूर भागना चाहते हैं तो ये ही साहसिक कदम उठाकर उस लक्ष्य की हम पूर्ति कर सकते हैं।

IJRRA

© 2017 IJRRA All Rights Reserved 

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1– सिंह प्रेमलता, सम्पूर्ण क्रान्ति के सूत्राधार लोकनायक जयप्रकाश नारायण, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली–110002, वर्ष 2014 पृष्ठ संख्या 87।

2– सिंह, अजित आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं समाजवादी विचारक, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वर्ष–1990, पृ0सं0–383

3– अवस्थी, अमरेश्वर, अवस्थी राजकुमार, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया जयपुर, वर्ष–2011, पृ0सं0–365

4– विमल प्रसाद (सं0) सोशलिज्म, सर्वोदय एण्ड डेमोक्रेसी, एशिया पब्लिकेशन मुम्बई, वर्ष–1964, पृ0सं0–108

5– पूर्ववत्, सन्दर्भ, सिंह अजित, पृ0सं0–384

6– नारायण जयप्रकाश, समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द्र मार्ग, राजेन्द्र नगर पटना, सन्–1988, पृ0सं0–57

7– समकालीन राजनीतिक विचारक एवं सिद्धान्त, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक–124001, पृ0सं0–199

8– नागर, पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्लॉट नं0–01, झालान संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर–302004 राजस्थान, वर्ष–2003, पृ0सं0–580

9– पूर्ववत्, सन्दर्भ, नागर, पुरूषोत्तम, पृ0सं0–567

10– नागर, पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्लॉट नं0–01, झालान संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर–302004 राजस्थान, वर्ष–2003, पृ0सं0–580

11– पूर्ववत्, सन्दर्भ, नागर, पुरूषोत्तम, पृ0सं0–581

12– नारायण जयप्रकाश, समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द्र मार्ग, राजेन्द्र नगर पटना, सन्–1988, पृ0सं0–42

13– सिंह प्रेमलता, सम्पूर्ण क्रान्ति के सूत्राधार लोकनायक जयप्रकाश नारायण, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली–110002, वर्ष 2014 पृष्ठ संख्या 88, 89

14– सिंह शिला शरण, जय प्रकाश नारायण : आर्थिक दर्शन, जानकी प्रकाशन अशोक राजपथ चौहट्टा पटना– 800004 वर्ष 2015 पृष्ठ सं0 52


© 2017 IJRRA All Rights Reserved 